संदेहों के पार कैसे जायें

मीडिया के मूल्यों के संबंध में एक घटना फिर चर्चा में बनी रही। आज तक के वरिष्ठ संवाददाता पुण्य प्रसून बाजपेई को एक वीडियो क्लिप में 'आप' के प्रमुख अरविन्द केजरीवाल के कथन को उनके अनुसार उनके इंटरव्यू में प्रसारित करने पर सहमत होते दिखाया गया। करीब डेढ़ मिनट के इस वार्तालाप में प्रसारित कथ्य का सम्पादन केजरीवाल के अनुसार किया गया या यूं कहें कि केजरीवाल के हित में किया गया। हालांकि बाद में केजरीवाल सहित कुछ अन्य लोगों ने इसे संवाददाता के साथ होने वाली सामान्य औपचारिक बात ही बताई। इंडिया टुडे ने भी अपना पक्ष रखते हुए कहा कि जो भेंटवार्ता प्रसारित की गई उसका सम्पादन नहीं किया गया है। वह जस की तस ही प्रसारित की गई। पुण्य प्रसून को जानने वाले पत्रकारों ने कहा कि वे ऐसा कर ही नहीं सकते हैं। यू टयूब, जी न्यूज तथा अन्यत्र इस क्लिप सहित जो दिखाया गया और उस पर जो टिप्पणियां की गईं, वे मीडिया की भूमिका और उसके मूल्यों में आये बदलाव पर ही ज्यादातर केन्द्रित रहीं और उसे अच्छा नहीं माना गया।

हो सकता है और यह सही भी हो कि भेंटकर्ता तथा भेंटदाता के बीच यह सामान्य सी औपचारिक बात ही हो। यह फिक्सिंग का मामला न हो। इसकी असलियत तो अरविन्द केजरीवाल और पुण्य प्रसून बाजपेई ही जानते हैं। पर इस घटना से भी यह तो पता चलता ही है कि अब मीडिया के बारे में लोग किस तरह से सोचते हैं और उसकी भूमिका के बारे में उनकी चाहत क्या है। वे उससे निष्पक्ष और तथ्याधारित सूचना और विचार चाहते हैं। और यह भी कि उसका व्यवहार संदेह के परे, विश्वसनीय होना चाहिये। जिसने यह बातचीत रिकार्ड की संभवत: वह भी तो यही कहना चाह रहा हो कि मीडिया की पारदर्शिता धुंध और पर्दों के बिना हो। यह संदेह ही मीडिया की बदल गई भूमिका और मूल्यों के कारण ही तो पैदा हो रहे हैं। संभव है दो-चार दशक पूर्व संवाददाता और राजनेता या प्रशासक के बीच ऐसा संवाद अन्यथा न लिया जाता हो। तब उस पर किसी तरह की फिक्सिंग का संदेह न किया जाता हो। पर अब किया जाता है, यह तो कम से कम स्वीकार किया ही जाना चाहिये। एक पक्ष यह भी है कि इस बारे में पत्रकारों को कोई स्टेंड लेना चाहिये। जनसत्ता के सम्पादक ओम थानवी ने इस बारे में दो पत्रकारों के विचार फेसबुक पर प्रस्तुत करते हुए यही कहा है। दोनों के विचार में पुण्य प्रसून पर किया गया संदेह गलत बताया है।

प्रसंगत: लगभग इसी समय गुरू जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग की ओर से आयोजित मूल्य और मीडिया विषय पर आयोजित संगोष्ठी के विमर्श में अधिकतर अध्येताओं और मीडियाकर्मियों की प्रस्तुतियों का संकेत इसी दिशा में रहा है। वरिष्ठ पत्रकार के. जी. सुरेश तथा हरिमोहन शर्मा ने अपने वक्तव्यों में मीडिया के मूल्यगत व्यवहार में आये परिवर्तनों को सिलसिलेवार बताया और कहा कि मीडिया पर कम हुई विश्वसनीयता और उसे अपने हितों के लिए खरीदने की कोशिशें हमें रोकनी होंगी। अन्य अध्येताओं ने भी मीडिया की फूहड़ तथा असंयत भाषा, उसकी ओर से तथ्यों को नजरंदाज करने को अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि मीडिया का व्यवहार अपने मूल्यों से कितनी दूर तक हट गया है। हालांकि विमर्श को बहस में बदलते हुए कुछ मीडियाकर्मियों ने मीडिया के उन कार्यों को भी बताया जिनसे छिपाये गये भ्रष्टाचार उजागर हुए और मानवीय हितों के लिए मीडिया को उनके साथ खड़ा पाया गया। पर यह अपने पक्ष के बचाव की, एक मायने में, कोशिश ही थी और उनके स्वर भी किसी पैरोकार की तरह ही थे जो उतने ही तथ्यों का उपयोग करता है जो उसके पक्ष में होते हैं। यह इसलिए भी कि मीडिया की उपस्थिति का ऐतिहासिक अर्थ तो वही है जो उन्होंने बताया पर वे यह छिपा गये कि यह करते हुए मीडिया से कहाँ-कहाँ चूक हो रही है और उस तरह के परिवर्तन की वजह क्या है?

इस विमर्श में एक पक्ष यह भी उभरकर आया कि यदि मीडियाकर्मी सजग और मूल्यनिष्ठ हों तो उनका प्रबंधन करने की कोशिशें बेकार ही जाती हैं। उन्हें न तो लोभ से ललचाया जा सकता है और न भयभीत किया जा सकता है। कुछ मीडियाकर्मियों ने अपने स्वयं के अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि यह आप पर निर्भर है कि आप अपनी क्या कीमत और मूल्य तय करते हैं। उनके कहने का मतलब यही रहा कि मीडियाकर्मी को अपनी भूमिका के संबंध में स्वयं ही तय करना होगा। प्रो. जेना, अधिष्ठाता जनसंचार विभाग ने उदाहरण सहित अपनी प्रस्तुति में बताया कि देश में कुछ लोग ऐसे हैं जो मीडिया का प्रयोग जनसरोकारों के लिए कर रहे हैं। ऐसा करते हुए वे अपनी सुविधाओं और जोखिम की भी परवाह नहीं करते हैं। उन्होंने कहा कि यह उदाहरण बताते हैं कि यदि आप मीडिया को मूल्यनिष्ठ तथा मानवीय सरोकारों से जोड़ना चाहते हैं तो ऐसा किया जा सकता है।

पंजाब से आये दो अध्येताओं ने मूल्यों के लिए स्वयं की मानवीय संवेदनाओं की स्थिति के संबंध में भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि मूल्यों को मीडियाकर्मियों को अपने जीवन में धारण करना होगा तभी वे उन सरोकारों को समझ सकेंगे जिनकी अपेक्षा मीडिया से की जाती है। डॉ. हरदीप सिंह ने बहुत से उदाहरणों के साथ यह कहा कि मूल्यों का उत्स कहां है, उसे समझे बिना और उसे अपने जीवन में अपनाये बिना मूल्यहीनता के इस प्रवाह को रोका नहीं जा सकता है। उन्होंने कहा भी कि

मूल्य अंतरतम में स्थित परमात्म-प्रकाश की स्थिति है। सामान्य अर्थ में, अध्यात्म के सहारे ही मूल्यों को समझा जा सकता है और उन्हें अपने जीवन में अपना कर अपने कार्यों पर उनका प्रभाव जाना जा सकता है। पंजाबी टेक्नीकल विश्वविद्यालय के रणवीर सिंह ने कहा कि पहले हमको स्वयं ही मानवीय गुण अपने में धारण करने होंगे। केवल ऐसा व्यक्ति ही दूसरों के साथ व्यवहार करते हुए वस्तुत: मानवीय हो सकता है। इन दोनों अध्येताओं की प्रस्तुति मानवीय व्यवहार और सोच के स्रोत को समझने की रही है जिसे हम अध्यात्म की परम्परा का ही अंग मानते हैं।

इस विमर्श से बहुत साफ समाधान तो नहीं निकला पर यह तो संकेत मिला ही है कि मूल्यों के संबंध में तथा उससे जनित व्यवहार की स्थिति क्या है। अरविन्द केजरीवाल और पुण्य प्रसून की बातचीत के उस हिस्से से उपजा मूल्य-संकट क्या है। इसका एक उपाय तो यह है कि इसे बहस में बदल दें और इस पार या उस पार खड़े होकर बहस करते रहें। दूसरा उपाय है कि इससे इस सबके मूल स्रोत को पहचान कर उसे अपनाने के उपायों पर चर्चा करें और प्रेरित करें जिससे ऐसे संदेह तिरोहित हो सकें और पत्रकारिता के मूल्यों की वापसी हो सके।

****